सूत्रकृताङ्गसूत्र भा. दूसरे की विषयानुक्रममणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ
	तीसरा अध्ययन का पहला उद्देशा	
१	साधुको परीषह और उपसर्ग को सहन करनेका उपदेश	१–८
२	संयम का रूक्षत्व का निरूपण	९–१२
३	भिक्षापरीषह का निरूपण	१३–१६
४	वधपरीषह का निरूपण	१७–२६
५	दंशमशकादि परीषहों का निरूपण	२७–२८
६	केशलुंचन के असहत्व का निरूपण	२९–३१
७	परतीर्थिकों का पीडित करनेका निरूपण	३२–३७
८	अध्ययन का उपसंहार	३८–३९
	तीसरे अध्ययन का दूसरा उद्देशा	
९	अनुकूल उपसर्गों का निरूपण	४०–८७
	तीसरे अध्ययन का तीसरा उद्देशा	
१०	उपसर्गजन्य तपःसंयम विराधना का निरूपण	८८–१०६
११	अन्यतीर्थिकों के द्वारा कहे जानेवाले आक्षेपवचनों का निरूपण	१०७–१११
१२	अन्यतीर्थिकों के द्वारा किये गये आक्षेप वचनों का उत्तर	११२–१२५
१३	वाद में पराजित हुए अन्यतीर्थिकों की धृष्टता का प्रतिपादन	१२६–१३०
१४	वादिके साथ शास्त्रार्थ में समभाव रखने का उपदेश	१३१–१३७
	तीसरे अध्ययन का चतुर्थ उद्देशा	
१५	मार्ग से स्खलित हुए साधु को उपदेश	१३८–१९९

चोथा अध्ययन का पहला उद्देशा

१६ स्त्री परीषह का निरूपण २००–२७७

दूसरा उद्देशा

१७ स्खलित साधु के कर्मबन्ध का निरूपण २७८–३२६

पांचवां अध्ययन का पहला उद्देशा

१८ दना का निरूपण ३२७–३९०

पांचवा अध्ययन का दूसरा उद्देशा

१९ नारकीय वेदना का निरूपण ३९१–४५२

छट्ठा अध्ययन

२० महावीर भगवान के गुणों का वर्णन ४५३–५४७

सातवां अध्ययन

२१ कुशीलवालों के दोषों का कथन ५४८–६४३

आठवां अध्ययन

२२ वीय के स्वरूप का निरूपण ६४४–७१४

समाप्त